02 / 01 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

चमकते हुए सितारे और श्रेष्ठ तकदीरवान आत्मा का अनुभव

➢➢ मैं भाग्यवान आत्मा हूँ...

➳_ ➳ एकांत में बैठी हुई अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख रही हूँ...

➳_ ➳ बाबा का बनने के बाद मेरी तकदीर का सितारा कैसे चमकने लगा है...

→ वाह रे मैं भाग्यवान आत्मा...

→ वाह रे मैं लकीयेस्ट आत्मा...

■ स्वयम भाग्यविधाता बाप मेरे भाग्य के गुणगान कर रहे हैं...

➢➢ मैं बाबा के स्नेह में मगन हूँ...

➳_ ➳ यह स्नेह दिव्य प्राप्ति करा रहा है...

➳_ ➳ ब्रह्मा माँ के साथ मैं दिव्य रूहानी मिलन मना रही हूँ...

→ मैं स्वयम को मधुबन भूमि पर देख रही हूँ..

■ मधुबन त्याग तपस्या की भूमि..

■ ब्रह्मा बाप की साकार कर्म भूमि...

■ सेवा भूमि...

■ बाप बच्चों के साकार मिलन की भूमि...

▶ मैं ज्ञान सितारा ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा बाबा से मिलन मना रही हूँ...

➢➢ मैं एव्र रेडी आत्मा हूँ..

➳_ ➳ मैं लास्ट सो फ़ास्ट पुरुषार्थी हूँ..

➳_ ➳ बाप की स्नेही हूँ...

➳_ ➳ सहयोगी हूँ...

➳_ ➳ भाग्य विधाता बाप से श्रेष्ठ भाग्य का खजाना ले रही हूँ...

→ मेरे भाग्य के क्या कहने...

→ भगवान जिसकी महिमा गा रहे हैं...

■ भगवान की दिव्य पालना में मैं पल रही हूँ...

■ भगवान के सामीप्य का...

■ उनके साथ का अनुभव कर रही हूँ...

■ मैं बाबा के स्नेह में समाई हुई हूँ..

■ स्नेह सागर पिता की मैं संतान हूँ...

- मैं स्नेही मूर्त हूँ..
  - मैं हीरो एकटर हूँ...
  - सर्व शक्तियों से संपन्न हूँ...
  - बाप की प्यारी आत्मा हूँ...
  - सर्व श्रेष्ठ तकदीरवान हूँ...
  - वर्तमान और भविष्य तख़्तनशीं हूँ...
  - पदमापदम भाग्यवान हूँ...
  - मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ...